राघवेन्द्र गडगकर

चित्रः अतनु राय, नीलेश गहलोत

कुछ दिन पहले क्या शानदार पर्चा पढ़ने को मिला! अफसोस भी हुआ कि इसे मैंने क्यों नहीं लिखा। मैंने क्या पिछले सौ सालों से किसी ने भी इस पर लिखा क्यों नहीं। कौन है जिसने हर दिन कुत्तों को गलियों में मारे-मारे फिरते न देखा हो। पर सलीके से उन्हें देखना, उनकी हरकतों पर नज़र रखना, उन्हें दर्ज करना किसी से न हो सका। खैर, तब न हुआ, अब हुआ।

इस पर्चे ने एक और पुरानी याद ताज़ा कर दी। कोई पचासेक साल पुरानी बात। तब मैं बैंगलोर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में रहते एक ततैये (इंडियन पेपर वास्प) पर काम कर रहा था। बैक्टीरिया और वायरस के आपसी रिश्तों को जान समझ रहा था। उन दिनों मशहूर इकोलॉजिस्ट माधव गाडगिल और उनके छात्रों से लगातार मिलना-जुलना होता रहता था। वे पास के बाँदीपुर टाइगर रिज़र्व में चीतलों पर काम कर रहे थे। उन्हीं दिनों उनका एक पर्चा बाँदीपुर में एक साल छपा।

मुझे उनका वो प्रोजेक्ट बहुत दिलचस्प लगा जिसमें देखा जा रहा था कि चीतल सारा दिन क्या-

क्या करते हैं। उन्होंने कुछ चीतल पहचान कर उनकी हर हरकत पर निगाह रखी। जब तक कि वो नज़र से गायब न हो गए। दिन भर में कोई 6500 हरकतों को नोट किया गया। इनसे चीतल के दिनभर का लेखा-जोखा तैयार किया। वो कितनी देर घूमते बिताते हैं। शिकार से बचने में, खुद को सँवारने में, लड़ने, खेलने, अपने साथी को रिझाने में उनका कितना समय लगता है। दिलचस्प था यह जानना कि चीतल का 80 से 90 फीसदी समय खाने में जाता है। 4 से 8 प्रतिशत शिकार से बचने में। 6 से कम प्रतिशत लड़ने में। 5 प्रतिशत से कम खुद को दिखाने में। एक या इससे भी कम फीसदी समय इधर-उधर घूमने में लगता है। इतना ही समय खुद की साफ सफाई में लगता है। 2 फीसदी से कम समय खेलने में और 5 फीसदी साथी से प्रेम प्यार करने में बीतता है।

इसके बाद बच्चों, वयस्क मादाओं और नर चीतलों के समय का भी पूरा लेखा-जोखा तैयार किया। और पाया कि अवस्थाओं के हिसाब से अलग अलग कामों में लगनेवाला समय बदलता रहता है। जैसे, कड़े सींगों वाले नर खाने-पीने में कम समय लगाते हैं, पर खुद को दिखाने, लड़ने और घूमने-फिरने में ज़्यादा समय लगाते हैं। जबकि मादाओं का शिकार से बचने में ज़्यादा वक्त लगता है। और बच्चे वो तो खेलने-कूदने में रमे रहते हैं।

यह जानना इतना मज़ेदार था कि मन किया पता लगाऊँ और जीव किस-किस में कितना समय लगाते हैं। पर हैरान रह गया कि कहीं कोई जानकारी न थी। कितना आसान है और कितना मज़ेदार भी, फिर भी क्यों किसी को इस पर समय लगाने का ख्याल नहीं आया। इस एक आँकड़े से कितना कुछ पता चला सकता है कि अलग-अलग जानवर जो कुछ भी, और जैसे भी करते हैं, वो करते क्यों हैं।

मैंने तभी तयकर लिया कि पहला मौका हाथ लगते ही मैं पता लगाऊँगा कि मेरे ततैये सारा-सारा दिन क्या करते हैं!

कब्बन बाग के ततैये

जल्द ही मुझे एक मौका मिल गया। बैंगलोर के कब्बन बाग में मुझे एक किस्म के ततैयों के छत्ते मिले। मेरा यहाँ आना जाना यूँ भी काफी था। एक तो वो मेरे कॉलेज के रास्ते में था। दूसरा, यहाँ एक बहुत बढ़िया लाइब्रेरी थी। मैं घण्टों हाथ में नोटबुक और पेंसिल लिए इनके छत्ते के सामने बैठा रहता। अकसर कुछ उत्साही बच्चे मुझे घेरे रहते थे।

सबसे पहले तो मैंने उन सब कामों की एक लिस्ट बनानी शुरू की जो ततैये मुझे करते दिखते थे। जैसे, टाँगे मोड़कर और एंटीना झुकाए बैठना। एंटीना उठाए बैठना। एंटीना और पंख उठाए बैठना। अपनी सफाई करना। चलना। अपने छत्तों का मुआयना करना। लार्वा को खिलाना। दूसरे ततैयों पर हमला करना, उन्हें डंक मारना या उनका पीछा कर भगा देना, छत्ते से गायब रहना। कभी खाने-पीने या छत्ता बनाने के सामान के साथ तो कभी खाली हाथ बाहर से लौट आना। मेरी लिस्ट में कोई सौ काम जुड़ गए थे।

यह तो हुआ मेरा पहला काम। पर अभी दो ज़रूरी काम होने बाकी थे। एक, यह कि ततैयों को पहचानूँगा कैसे।

महाबलेश्वर सेमिनार

1979 में माधव गाडगिल ने एक सेमिनार आयोजित किया। विषय था सामाजिक व्यवहारों का विकास। इसमें दुनिया भर के नामी जानकार आए।

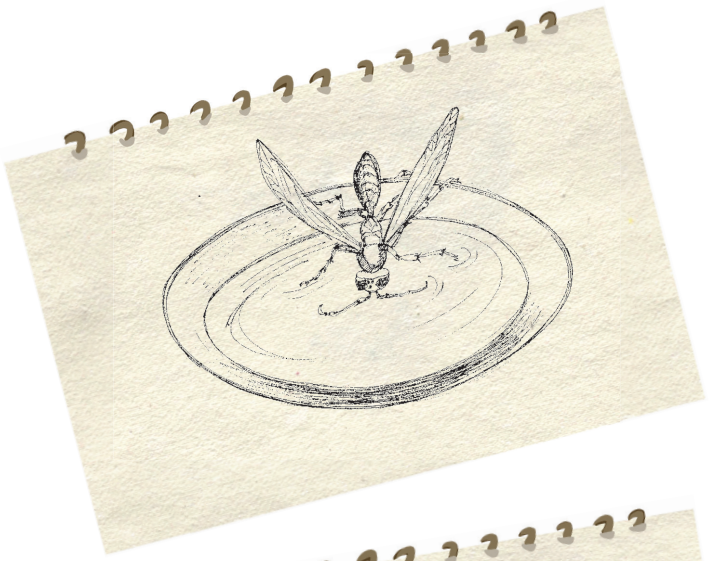

मेरी खुशकिस्मती कि कई खाली दोपहरें इनके साथ बिताने को मिलीं। पर मैरी जेन से मिलना बहुत खास रहा। हममें से कई उन्हें ततैयों की रानी कहने लगे थे। इतनी सौम्य, मिलनसार, दिलदार कि उन-सा फिर कोई न मिला। वो बैंगलौर आईं और दूसरी बहुत-सी मददों के अलावा मुझे ततैयों की पहचान भी सिखाई।

जाते-जाते वो अपने इनैमल पेंट छोड़ गईं जो हमेशा उनके पास रहते थे। और कुछ रुपए भी जो उन्होंने कमाए थे। शुक्रिया मैरी, आपकी इस मदद से मैं ततैयों पर अपनी छोटी-सी रिसर्च कर पाया। रोज़ कप्पन बाग ऑटो से आना-जाना भी इसी की बदौलत सम्भव हुआ।

मेरी दूसरी दुविधा थी कि कैसे ततैयों को इस तरह देखें कि आप बस उन्हें देख ही रहे हैं। उनके बारे में आपके अच्छे-बुरे ख्यालों को बीच में आने दिए बगैर। सुनने में यह जितना आसान लगता है, उतना है नहीं। आप भले मन से जितने पक्के इरादे कर लें, दर्ज करते समय कलम फिसल ही जाती है। तो देखी चीज़ों को जस का तस दर्ज करने का हुनर मुझे सीखना था। और वो मिला जीन ऑटमैन के एक पर्चे में। इंसानी पूर्वाग्रहों को परे रखने के एक नहीं तीन तरीके पता चले। एक था, छत्ते के सारे ततैयों पर एक उड़ती नज़र डालना और उस पल वो जो करते दिखें उन्हें दर्ज कर लेना। कुछ-कुछ फोटो खींचने जैसा। डिब्बे में रखी पर्चियों में से बिना देखे जैसे कोई पर्ची चुनते हैं, वैसे ही मैंने ततैयों को चुनना शुरू किया। मैं अपनी दाईं जेब में ततैयों के नाम की पर्चियाँ रखता। एक-एक को निकालता जाता और उन्हें बाईं जेब में रखता जाता।

दूसरा तरीका था यूँ ही किसी एक ततैये को चुन

लेना और फिर वो जो भी करे उसे नोट करते जाना।

तीसरा तरीका था उनकी कुछ विरली हरकतों को चुनना (ऐसी जो पहले दो तरीकों में कम दर्ज हुई हों)। और एक तय समय के भीतर कोई भी ततैया उन हरकतों को करता दिखे, उसे दर्ज कर लेना।

इन तीन तरीकों को मिलाकर मैंने कब्बन बाग के दो छत्तों में चिन्हित ततैयों की हर हरकत को दर्ज करना शुरू कर दिया। ततैए दिन भर में कब क्या करते हैं इसका पूरा टाइम टेबिल अब मेरे पास था। (विज्ञान में इसे टाइम एक्टिविटी बजट कहते हैं।)। आँकड़े जब सामने हों तो हमारी राय आम तौर पर ध्वस्त हो जाती है। मैं भी झटका खा गया जब देखा कि ततैये सिर्फ छह कामों में अपना 95 फीसदी समय खपा देते हैं। मेरी सौ कामों वाली लम्बी लिस्ट धरी रह गई। ऊपर से ये छह काम मुझे तो ततैयों की ज़िन्दगी में कोई खास मतलब के नहीं लगते थे। कोई कब तक बैठे-बैठे खुद को सँवारना, एंटीना खड़े कर बैठे रहना, पंख उठाकर बैठे रहना, चलना, छत्ते को जाँचना-परखना, छत्ते से गायब रहना करता रह सकता था। इन छह कामों में न खाना था, न लड़ना-भिड़ना और न साथी संग प्रेम रचाना।

फिर मैंने खुद से कहा देखो भाई, अगर दर्ज करते हुए अपने पूर्वाग्रहों को बीच में न आने दिया तो अब जब उनके कुछ व्यवहार साफ तौर पर उभरते नज़र आ रहे हैं तो अब क्यों मैं अपने पूर्वाग्रहों को बीच में आने दूँ। इस ज्ञान प्राप्ति के बाद, उन छह कामों को ध्यान में रखते हुए मैं ततैयों के जीवन के बारे में अन्दाज़ लगाने लगा।

और क्या ज़बरदस्त पैटर्न दिखा। यह सही है कि लगभग सभी ततैये 95 फीसदी से ज़्यादा समय इन्हीं छह कामों में लगाते हैं, पर कौन किस काम में कितना समय लगाता है इसमें काफी अन्तर दिखा। कुछ ततैए 50 प्रतिशत से ज़्यादा समय बैठे-बैठे खुद को सँवारने में लगाते हैं और 10 प्रतिशत या कम समय अपने छत्ते से गायब रहते हैं। और कुछ एकदम उलट करते हैं। 70 प्रतिशत टाइम घर से बाहर रहना और 10 प्रतिशत से कम समय अपनी साफ-सफाई में लगाना। ऐसे ही कई देर तक अपने एंटीना उठाए बैठे रहते हैं तो कई देर तक पंख और एंटीना नीचे किए बैठने में सुकून पाते हैं।

ये इतना फर्क क्यों?

क्या इससे उनकी सोसाइटी के रंग-ढँग की ओर कोई इशारा मिलता है!

कहीं अटक जाओ तो सबसे अच्छा तरीका है किसी से साझा करना। मैंने भी वही किया। देर रात की फिल्म देख पैदल लौटते हुए मैंने अपने दोस्त निरंजन जोशी को सब कुछ बता दिया। इत्तेफाकन वो भी ऐसी ही किसी मुश्किल से जूझ रहा था। अलबत्ता, उसका सन्दर्भ दूसरा था। वो एक शोधकर्ता को भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में होने वाली बारिश के पैटर्न को समझने में मदद कर रहा था। हमें समझ आया कि उसी तकनीक का इस्तेमाल हम ततैयों के टाइम एक्टिविटी बजट को समझने में भी कर सकते हैं।

और क्या कमाल कि वो काम कर गया।

इससे हम ततैयों को तीन हिस्सों में बाँट सके।

देर तक बैठे रहकर खुद को सँवारने वालों को
हमने नाम दिया - बिठाके
लड़ने-भिड़ने में तेज़ - लड़ाके
छत्ते से देर तक गायब रहने के बाद कुछ लेकर
लौटने वाले - जुटाके

अगले चालीस सालों में मैंने या मेरे छात्रों ने इस आकर्षक जीव इंडियन पेपर वास्प पर जितने भी काम

किए वो इस बुनियाद पर खड़े थे।

कुत्ते दिन भर क्या करते रहते हैं?

चलिए, अब वहीं चलते हैं जहाँ से बात शुरू हुई थी। अरुणिता बैनर्जी और अनन्दिता भद्रा ने कुत्तों के दिन-रात को समझने के लिए जो काम किया वो चीतल या ततैयों के काम से कहीं आगे का है।

उन्होंने बारह साल तक कुत्तों की हर हरकत पर नज़र रखी। और तकरीबन 177 हरकतों की सूची बनाई (इसका बढ़ना जारी है)। जैसे ही कोई कुत्ता नज़र आता वो उसकी हरकत को नोट कर लेतीं। इस तरह एक साल में उन्होंने 5669 हरकतें दर्ज कीं।

इसके लिए वो तयशुदा रास्तों और यूँ ही चुने ठियों पर रात दिन आती-जाती रहीं। उन्होंने पश्चिमी बंगाल के कई उपनगरों और आयसर कोलकाता के कैम्पस के कुत्तों पर नज़र रखी। जैसे ही कोई कुत्ता दिखता वो नोटबुक (बाद के दिनों में फोन पर) में उसकी उम्र, लिंग, हरकत, समय, दिन और जगह नोट कर लेतीं। अरुणिता कहती हैं - शनिवार-इतवार को मैं कल्याणी से नौ स्टेशन दूर बैरकपुर का वापसी टिकट लेती। कोविड से पहले के दिनों में हर स्टेशन पर आपको बेशुमार लोग, बेशुमार कामों में लगे दिखते। हर ओर खाने के बेशुमार ठिए होते, रिक्शा स्टैण्ड और बड़े बस अड्डों पर खास तौर पर। यानी कुत्ते भी बेशुमार मिलते। खाने और रहने की जगह आसानी से मिल जाती इसलिए बहुत-से कुत्ते तो स्टेशन पर ही रहने लगे थे। मैं कल्याणी से ट्रेन पकड़ती और बीच के दस में से किसी भी स्टेशन पर उतर जाती। स्टेशन और आसपास के इलाकों में कुत्तों की हरकतों को दर्ज करती और किसी भी दिशा में जा रही किसी भी ट्रेन में बैठ जाती।

कुत्ते जो काम सबसे ज़्यादा करते पाए गए वो था - आराम फरमाना। कई तरह की सक्रिय मुद्राएँ बनाने, चलने की अदाएँ, खाने की तलाश, खाने, भौंकने, खेलने में उनका बहुत ही कम समय लगता दिखा।

इसमें दिन के अलग-अलग समय में या मौसमों में दिखनेवाले कई दिलचस्प बदलावों का ज़िक्र नहीं

किया गया है। ततैयों के अध्ययन की तरह ही इस पर भी कई सवाल उठेंगे। इससे इन जैसे कई जाने-पहचाने जानवरों के बारे में रोचक तथ्य पता करने के रास्ते भी खुलेंगे।

एक अचरज तो इनके पर्चे में है ही। आम तौर पर हमारा मानना है कि कुत्ते रात में ज़्यादा सक्रिय होते हैं। पर आँकड़े बताते हैं कि गली के कुत्ते दिन में भी उतने ही सक्रिय रहते हैं। कुत्ते अकसर इंसान द्वारा बदली परिस्थितियों से तालमेल बैठा लेते हैं। और जी जाते हैं। ऐसा कैसे हो पाता है? इससे यह समझें कि पालतू जीव अपने आसपास की परिस्थितियों से आसानी से तालमेल बैठा पाते हैं। या फिर यह समझें कि जो तालमेल बैठा पाता है उसे पालतू बनाना आसान हो जाता है?

कुत्तों पर बनी वैज्ञानिक समझ से हमें कुत्तों के बारे में पता चलने के साथ-साथ यह भी पता चलेगा कि कैसे हम उनसे तालमेल बैठा पाएँ। इससे विकास के बारे में भी जानकारी मिलेगी। खास तौर पर इस पर कि विकास के दौरान पालतू बनाना कैसे सम्भव हो पाया।

कुत्ते हर जगह दिख जाते हैं। उन्हें देखना, उन पर नज़र रखना मुश्किल भी नहीं। इस लिहाज़ से कुत्ते कई शोधों के लिए मुफीद ठहर सकते हैं। पर कुत्ते कम ही किसी वैज्ञानिक शोध का हिस्से बने हैं। कुछ इसलिए भी कि विज्ञान में किस चीज़ को इज़्ज़त बख्शी जाती है उसे लेकर हमारी सोच तंग है। ऊपर से खुद विज्ञान को लेकर हम कोई रोशन समझ नहीं बना पाए हैं।

पर शुक्र है चीज़ें बदल रही हैं।

कुत्तों पर किए गए इस अध्ययन ने मुझे उम्मीदों से भर दिया है। यकीन है कि उम्मीद की फसलें लहलहाती रहेंगी।

(शुक्रिया The Wire)